जोगी सन्यासी, बैरागी ब्रांभण घणा,
नाना बेख जगत में, सेविड़ा उदासी,
तनी में को हिकिड़ो, दरिसन जो पियासी,
जंहिंजो फंदु फासी, सामी कटियो सतिगुरूअ.

सामी साहब कहते हैं कि संसार में आजकल संन्यासी वैरागी, ब्राह्मण आदि बहुत हो गये हैं। अनेक 'सेवड़ा' (जैन मत के साधु) एवं उदासीन व्यक्ति भी विविध प्रकार के वेश धारण कर विचरण करते हुए दिखाई देते हैं। ये सभी अपने अपने ढंग से उपासना करते रहते हैं। किन्तु इन सब में कोई विरला पुरुष ही होगा, जिसके हृदय में परमेश्वर के दर्शन करने की सच्ची प्यास है। अपवाद रूप में ही कोई ऐसा होगा, जो सतगुरु की शरण में गया है और सतगुरु ने उसके जन्म-मृत्यु के बंधन से मुक्ति दिलायी होगी।

परमेश्वर की भक्ति द्वारा उसे प्राप्त करने के लिए तथा मोक्ष प्राप्त करने के लिए अनेक प्रकार के साधन एवं मार्ग अपनाये जाते हैं। भिन्न-भिन्न प्रकार की साधनाएँ की जाती हैं। कर्ममार्ग, ज्ञान मार्ग एवं भक्ति मार्ग द्वारा परमेश्वर को पाने की इच्छा करने वालों की कोई कमी नहीं है। अपना घर-बार त्याग कर, संन्यासी, योगी आदि बन कर, कठोर साधनाओं द्वारा शरीर को क्लेश देने वाले भी बहुत मिल जाते हैं। नाना वेशों में भटकने वाले भी दिखाई देते हैं। सामी साहब उनके बाह्य आडंबर आदि पर प्रश्न चिह्न लगाते हुए कहते हैं कि ऐसे पुरुषों में परम पिता परमेश्वर के दर्शन करने की सच्ची प्यास या लगन नहीं होती। बाह्याडंबर में लिप्त ऐसे लोग प्रभु को पाने के अधिकारी भी नहीं बन सकते। प्रभु तो सच्चे प्रेम से प्राप्त हो सकता है। इन सब में कोई विरला पुरुष ही होता है, जिसके हृदय में प्रभु को पाने की सच्ची कामना और प्रीति होती है। ऐसे विवेकवान प्रेमीजनों पर सतगुरु भी कृपा करते हैं और उनका आध्यात्मिक मार्ग आसान कर देते हैं।

बाह्य-आडंबर वाले खोटे साधु-संतों की निंदा कबीर जैसे संतों ने भी की है-

तन को जोगी सब करै, मन को करै न कोय।
सहजै सब सिधि पाइयै, जो मन जोगी होय।।

माला तिलक लगाइके, भक्ति न आई हाथ।
दाढ़ी मूँछ मुँडाइके, चले दूनी के साथ।।

■